Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 6 | ISSUE : 12 | DECEMBER 2020

पब्लिक आर्ट : कलाकार से जन मानस तक

ज्योतिका राठौड़ [1]

[1] 157, भट्टियानी चौहट्टा, उदयपुर (राज.)–313001

ABSTRACT:

KEYWORDS:

आप सभी ने चौराहों, सार्वजनिक स्थलों, उद्यानों के बीच मूर्तियाँ, फ़व्वारे, कलात्मक स्मारकों को प्रदर्शित किये देखा ही होगा। क्या ये सभी "पब्लिक आर्ट" कहे जा सकते हैं ? तो हाँ ये सभी पब्लिक आर्ट के ही उदाहरण हैं। पारिभाषिक तौर से यदि पब्लिक आर्ट का समझा जाये तो "सार्वजनिक स्थल पर चाहे वह सरकारी हो या निजी, प्रदर्शित की जाने वाली स्थाई या अस्थाई संस्थापनाओ को, जिनका कलात्मक मूल्य हो और जिसे देखने की सुविधा किसी भी साधारण व्यक्ति तक उपलब्ध हो, पब्लिक आर्ट अर्थात् जन कला कहा जाता हैं।"

यदि जन कला की पृष्ठभूमि की बात करे तो भारतीय परिप्रेक्ष्य में जन कला का अस्तित्व तब से है जिस समय को हम पिछड़ा हुआ समय मानते आ रहे हैं। भारत में राजाओं, महाराजाओं, बादशाहों व सामन्ती शासन के समय से ही अनेक कलाकृतियाँ बनवाई व प्रदर्शित कराई गई थी दिल्ली की कुतुबमोनार, जामा मस्ज़िद, लाल किला, कोणार्क सूर्य मन्दिर, साँची स्तूप, खजुराहों के मन्दिर, जयपुर व दिल्ली के जंतर मन्तर ये सभी जन कला के उदाहरण ही तो हैं जो अलोकतांत्रिक समय मे भी कला के लोकतांत्रिक होने का परिचय देते हैं।ये तो हुई जन कला के इतिहास से जुडी बात।

आज से कुछ वर्षो पूर्व हमारे यहाँ पब्लिक आर्ट की स्थति ज्यादा अच्छी नहीं कही जा सकती थी।" पब्लिक आर्ट "के नाम पर केवल नेताओं, ऐतिहासिक चरित्रों की मूर्तियाँ या फिर रंग बिरंगे फ़व्वारे बगीचें लगाये गये। उसमें भी राजनीतिक पक्ष अपना स्वार्थ देखते व राजनीतिक दखलअंदाजी रहती हैं।भारत में सत्ताधारी लोगो में कला की समझ अपेक्षाकृत कम होती है। सरकार के पास नगर सौन्दर्यीकरण के नाम पर बजट होते हुए भी उसका इस्तेमाल केवल राजनितिक हितों, साधनों के लिए किया जाता रहा हैं, यदि इस बजट का उपयोग ईमानदारी से नगरीय सौंदर्य को बढ़ानें में किया जाता तो नगरीय सौंदर्य के साथ साथ जनता को भी कला से जोड़ने का अवसर मिलता।

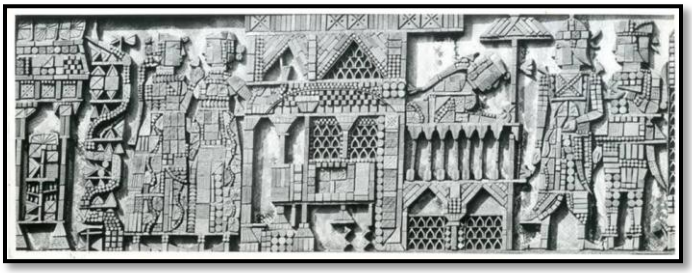

1. TERACOTA MURAL "THE KING OF THE DARK CHAMBER"1963, K.G.SUBHRAMANYAN, RAVINDRALAYA, LUCKNOW.

इसके विपरीत विदेशो में कला को बहुत संरक्षण दिया जाता हैं, पब्लिक आर्ट (जन कला) को व कलाकार को प्रोत्साहित करने के लिए कई विशेष नियम व योजनाएं बनाई गई हैं। हंगरी की सरकार तो कलाकार के रहने और काम करने के लिए नाममात्र किराये पर जगह देती है साथ ही उसका प्रचार भी करती है ताकि पर्यटक वहाँ आये व कलाकृतियों को देखे खरीदें। इसके अलावा न्यूयॉर्क जैसे शहर में तीन मंजिला से ऊपर बिल्डिंग बनाने का प्लान तभी स्वीकृत होगा जब तक उस पर पब्लिक आर्ट को स्थान दिया गया हो। वहाँ हर कदम पर पब्लिक आर्ट होती है, हमारे यहाँ तो लोगों को देखने तक का मौका नहीं दिया जाता ।

भारत में प्रतिभाओं की कमी नही हैं और संसाधनों की मात्रा भी बहुत है, बस जरुरत है तो उनके सही इस्तेमाल की जिससे लोगो में कला के प्रति सम्मान व समझ पैदा हो सके। भारत में पब्लिक आर्ट अधिक न होन का कारण लोगों द्वारा वास्तविक कला को करीब से देखने का अवसर नही मिल पाना हैं। कलाकार के अतिरिक्त आम लोगों में सृजनात्मक कला के लिये सम्मान व महत्ता कम देखने को मिलती और यही एकमात्र कारण हैं जिसकी वजह से कला को वह स्थान अब तक नहीं मिल पाया जिसकी वह वास्तविक हकदार हैं।

विगत कुछ वर्षो से पब्लिक आर्ट ने भारत में रफ़्तार पकड़ ली हैं। कलाकारों ने कला को, कला दीर्घाओं की सीमाओं को तोड़ते हुये " पब्लिक आर्ट" के रूप में सीधे जनता के समक्ष ला कर रख दिया हैं। कला दीर्घाओं व कला शिविरों में आने की स्वतन्त्रता आम जन को भी होती हैं परन्तु उसमें समाज का एक विशेष वर्ग ही पहुँच पाता हैं।अतः पब्लिक आर्ट के माध्यम से कलाकार को यह अवसर मिलता है कि वह अपनी कला को ही आम जन तक पहुँचा पाये व लोगों में सृजनात्मक अभिवृद्धि को बढ़ावा मिले।

2." CLOUD GATE " ANISH KAPOOR CHICAGO

कला का मूल उद्धेश्य मनुष्य को संवेदनशील बनाना हैं। प्रकृति ने मनुष्य में कलाप्रवृति जन्मजात दी हैं और लोगों में सौंदर्यबोध की अभिवृद्धि कराने का कार्य कलाकार वर्ग आसानी से कर सकेगा इसीलिये समाज ने ये दायित्व कलाकार को सौंपा हैं। ग्रैफिटि (भित्ति चित्र), म्यूरल, इंस्टॉलेशन व विभिन्न माध्यमों में बने मूर्तिशिल्प ये " पब्लिक आर्ट " के कुछ ऐसे कलारूप है जिन्होंने नगरीय सौंदर्य में कला की अनूठी छाप छोड़ी हैं व इसे अलग ही ऊँचाई तक पहुँचाया हैं। नगरों का सौंदर्य तो बढ़ा ही है साथ ही आम जन को कला का रसास्वादन का मौका मिला।

" पब्लिक आर्ट " में म्यूरल का स्थान उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि "मूर्तिशिल्पों "का। भित्ति चित्रों के माध्यम से अपनी बात लोगों तक पहुचाना भारतीय संस्कृति की पुरानी पहचान रही हैं। राजस्थान, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में आज भी ऐतिहासिक म्यूरल देखे जा सकते हैं। आमतौर पर इसे दीवारों पर बनाई गई पेन्टिंग के रूप में समझा जाता है परंतु अब टाइल्स, टेराकोटा,सीमेन्ट,बालू, ग्लास,प्लास्टिक, लोहे और स्टील आदि माध्यमों ने म्यूरल के रूप में अपनी जगह बना ली हैं।इन भिन्न भिन्न प्रकार के माध्यमों से भिन्न भिन्न प्रकार के म्यूरलस् का निर्माण हमें बहुतायत से देखने को मिल रहा हैं साथ ही भिन्न भिन्न क्षेत्र के लिये भिन्न भिन्न तरह के म्यूरल बनाये जाते हैं जिनमें ट्रेडीशनल म्यूरल, कॉर्पोरेट म्यूरल, टाइल्स म्यूरल, राजनितिक एवं ऐतिहासिक इमारतों, भवनों व संस्थाओं रेल्वे स्टेशन की दीवारों पर बने म्यूरल नगरों की सुंदरता को बढ़ा रहे हैं जिनमें – के. जी. सुब्रह्मण्यन द्वारा बनाया गया " किंग ऑफ द डार्क चेम्बर " जो कि लख़नऊ रेलवें स्टेशन के ठीक सामने रवीन्द्रालय प्रेक्षागृह पर बना हुआ हैं टेराकोटा म्यूरल का उत्कृष्ट नमूना हैं। इसके अतिरिक्त दिल्ली मेट्रो ने अपने स्टेशनों पर ब्रिटेन के ट्यूब स्टेशन की तरह म्यूरल बनवाकर कला को आम जन के लिये उपलब्ध कराया है तथा उत्तर प्रदेश की विधानसभा के हॉल में बने आर.सी. साथी,सुखवीर सिंह और रणवीर सिंह बिष्ट के म्यूरल भी उल्लेखनीय हैं।

3. GRAFFITI " WE LOVE DELHI " LODHI COLONY, NEW DELHI.

पब्लिक आर्ट का ही एक रूप " स्ट्रीट आर्ट " और "ग्रेफिटी आर्ट "के रूप में देखा जा सकता हैं। ये स्ट्रीट आर्ट व ग्रैफिटि आर्ट भित्ति चित्रों का ही आधुनिक रूप हैं।स्ट्रीट आर्ट एक ऐसी कला है जो अपने रंगो से ही सब कुछ कह देती है, इसके लिये शब्दों की जरुरत नहीं पड़ती और बड़ी ही आसानी से आप अपनी बात कह देते हैं। स्ट्रीट आर्ट की लोकप्रिय शैली में से एक "ग्रैफिटि आर्ट" हैं जो आज भी सामाजिक, राजनितिक सन्देश दे रही है ये दृश्य कला का स्वरुप है जो बिना किसी की अनुमति के सार्वजनिक स्थानों, इमारतों, सड़को व दीवारों पर बनाई जाती है।

न्यूयॉर्क की सड़कों से अब यह कला नई दिल्ली तक पहुँच गई हैं और इसमें दिल्ली का खिड़की विलेज, शाहपुर जाट, लोकनायक भवन, हौज खास, लोधी ऑर्ट डिस्ट्रिक व गोरेगांव मुम्बई, ब्रह्मपुर कलकत्ता जैसे शहर अपनी स्ट्रीट आर्ट व ग्रैफिटि के लिए भारत में अपना कलात्मक स्थान बना रहे हैं।

पब्लिक आर्ट में मूर्तिशिल्पों की बात करी जाये तो प्राचीन भारत से लेकर वर्तमान भारत तक मूर्तिशिल्पों का उपयोग पब्लिक आर्ट के लिए किया जाता रहा है,फर्क सिर्फ इतना है कि समय के साथ इन मूर्तिशिल्पों की रचना, माध्यमों व सृजनात्मक सोच में बदलाव आया है। अब मूर्तिशिल्पों में परंपरागत माध्यम प्रस्तर, संगमरमर, ब्रॉन्ज़, धातु, लकड़ी के अलावा पलास्टिक फाइबर, ग्लास, रबर ,चमड़ा, स्टील प्लेट व स्क्रैप मटेरियल इत्यादि का उपयोग किया जाने लगा हैं।

4. GENDA CIRCLE, VADODARA, GUJRAT

भारत के कई मूर्तिशिल्पकारों जैस अनीश कपूर(जो की भारतीय मूल के ब्रिटिश कलाकार हैं), सुबोध गुप्ता, रवीन्द्र रेड्डी, भक्ति खेर,रकीब शाह आदि ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय कला का प्रदर्शन "पब्लिक आर्ट "के रूप में किया हैं। शिकागों में प्रदर्शित अनीश कपूर का स्कल्पचर "क्लाउड गेट" पब्लिक आर्ट का विश्वस्तरीय अनुपम उदाहरण है।

इसी श्रृंखला में भारत में भी बड़ौदा शहर को नगरीय सौन्दर्यीकरण का अद्वितिय मिसाल कहा जा सकता है यहाँ अक्षर चौक में प्रदर्शित नागजी पटेल का स्कल्पचर "अबेकस "व रेस कोर्स रोड पर प्रदर्शित नरोत्तम लोहार का स्क्रैप मटेरियल से बना "गेंडा " आधुनिक माध्यमों में बने मूर्तिशिल्प है जो नगर की सुंदरता बढ़ा रहे हैं।यहाँ हर सर्कल पर कलाकारों की समकालीन कलाकृतियों को सजाया गया है जिससे की पुरे शहर में आपको विभन्न तरह के कला माध्यमों में बनी कला देखनें को मिलती हैं।

बड़ौदा की भांति राजस्थान भी पब्लिक आर्ट के क्षेत्र में अपनी कलात्मक पहचान बना रहा है। पिंक सिटी के नाम से प्रसिद्ध जयपुर अब पब्लिक आर्ट के लिए जाना जा रहा है यहाँ के नाहरगढ़ में भारत का पहला स्कल्पचर पार्क बनाया गया है जहाँ 61 समकालीन कलाकृतियों को स्थान दिया गया जो राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय कलाकारों द्वारा बनाई गई है। सिर्फ यही नहीं यहाँ के चौराहों पर भी धातुओं के कई बेहतरीन मूर्तिशिल्प लगायें गए है जिनमें अनूप भरतारिया के"तीज की सवारी" मूर्तिशिल्प में राजस्थानी संस्कृति की बेहद खुबसूरत झलक हैं।

जयपुर के बाद अब उदयपुर भी पब्लिक आर्ट के क्षेत्र में अग्रणी होने की तयारी में हैं। बीते कुछ वर्षो में यहाँ कला का विकास तेजी से बढ़ा है ।यहाँ के पुराने शहर के चांदपोल और अम्बराई घाट की तरफ की सड़कों के पास की दीवारों पर स्ट्रीट आर्ट व ग्रैफिटि आर्ट के बेहतरीन काम देखने को मिलते है । 2013 में उदयपुर के शिल्पग्राम में आयोजित "इंटरनेशनल स्टोन स्कल्पचर सिम्पोजियम"में राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय कलाकारों द्वारा मूर्तिशिल्पों का निर्माण हुआ जिन्हें यहाँ के रानी रोड व चौराहों पर सजाया गया। इसी तरह यहाँ की एम.एल.एस.यू वि"वविद्यालय के दृश्य कला विभाग ने स्क्रैप मटेरियल से बने मूर्तिशिल्पों का शिविर आयोजित किया इस शिविर में बने मूर्तिशिल्पों ने यूनिवर्सिटी परिसर की कलात्मक शोभा बढ़ा दी है।लोक कला मंडल में शैल चोयल जी द्वारा निर्मित टेराकोटा म्यूरल भी यहाँ की कलात्मकता का परिचय देता हैं।

5. THE SCULPTURE PARK , MADHAVENDRA PALACE, JAIPUR

भारत म यदि वास्तविक अर्थ में पब्लिक आर्ट सम्भव होती या होने दी गई होती तो हो सकता था कि भारतीय जन कला की स्थिति कुछ और ही होती। यहाँ कला के प्रचार की आवश्यकता है, कलाकारों के लिये अवसर की जरुरत है। जनस्थलों पर ऐसे स्कल्पचर, म्यूरल लगवाये जाने चाहिये जो आधुनिक होते हुए भी हमारी परम्परा से जुड़े हुए हो।

आज जिसे "पब्लिक आर्ट " कहा जाता है उसमें जनता की भागीदारी व उनका यथार्थ एक महत्व्पूर्ण तत्व है। इससे यह तो स्पष्ट हो ही गया कि कला सृजन का माध्यम चाहे कोई भी हो, परन्तु वह लोगों के अधिकाधिक सम्पर्क में आयें,अधिकाधिक देखी जाये तथा लोगों को अधिकाधिक प्रभावित करें, उनके उपयोग में आये तो उसकी सार्थकता और बढ़ जाती हैं। इससे लोगों में कला के प्रति सम्मान, विश्वास व जिज्ञासा बढ़ें और वे स्वयं को आनन्दित महसुस करे तब हो सही मायने में वह "पब्लिक आर्ट" कहलाई जायेगी ।

REFERENCES

1. कला दीर्घा अवस.6 छव.12, Apirl–2006 पृ.स.9 व 11